|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 06. April 2025 | | | |
| **5. Fastensonntag C Misereor-Sonntag** | | | |
| Erste Lesung: Jes 43,16-21; Zweite Lesung: Phil 3,8-14; Evangelium: Joh 8,1-11 | | | |
|  |  |  | |
| Eröffnung: | GL 273, 1-4 | O Herr, nimm unsre Schuld | |
|  | GL 267, 1 | O Mensch, bewein dein Sünde groß | |
|  | GL 277, 1+4 | Aus tiefer Not | |
|  | GL 272, 1+3 | Zeige uns, Herr | |
|  |  |  | |
| Kyrie: | GL 163, 5 | Herr Jesus, auferstanden von den Toten | |
|  |  |  | |
| Antwortgesang: | Ps 126,1-6 |  | |
|  | Kehrvers: GL 323 oder | Du hast mein Klagen | |
|  | Kehrvers: GL 443 | Im Jubel ernten | |
|  | Oder |  | |
|  | GL 457, 1-3 | Suchen und fragen | |
|  |  |  | |
| Ruf v. d. Evangelium: | Ruf: GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 | | |
|  |  | | |
|  | *Kehrt um zum Herrn von ganzem Herzen;* | | |
|  | *Denn er ist gnädig und barmherzig,* | | |
|  | *langmütig und reich an Güte.* | | |
|  |  | | |
|  |  | |  |
| Credo: | GL 178, 1+2 | | Amen. Ich glaube |
|  |  | |  |
| Gabenbereitung: | GL 460 | | Wer leben will |
|  | GL 210 | | Das Weizenkorn |
|  | GL 422, 2+3 | | Von Zweifeln ist mein Leben übermannt |
|  |  | |  |
| Sanctus: | GL 196 | | Heilig |
|  |  | |  |
| Agnus Dei: | GL 747 | | Gottes Lamm |
|  |  | |  |
| Danksagung: | GL 268, 1+3+5 | | Erbarme dich, erbarm dich mein |
|  | GL 359 | | O selger Urgrund |
|  |  | |  |
| Schlusslied: | GL 746, 1+3+6 | | Dich liebt, o Gott, mein ganzes Herz |
|  | GL 471, 1+4 | | O ewger Gott |
|  | (Alternativmelodie: GL 142) | |  |